पाण्डवों के अतिरिक्त यहाँ दोनों सेनाओं के सब योद्धा मृत्यु को प्राप्त होंगे; तेरे युद्ध न करने पर भी इनका नाश अवश्य होगा।।३२।।

तात्पर्य

यह जानते हुए भी कि श्रीकृष्ण उसके सखा और स्वयं भगवान् हैं, अर्जुन उनके द्वारा प्रकटित विविध रूपों को देखकर परम विस्मित हो उठा। अतएव उसने इस प्रलयकारी शक्ति-प्राकट्य का उद्देश्य जानना चाहा। वेदों में उल्लेख है कि परमसत्य श्रीभगवान् ब्रह्मासहित सभी कुछ नष्ट कर देते हैं। **यस्य ब्रह्मे च क्षत्रं च उभे भवत ओदनः। मृत्युर्यस्योपसेचनं क इत्थावेद यत्र सः।** अन्त में ब्राह्मणों, क्षत्रियों तथा अन्य सभी को श्रीभगवान् ग्रस लेते हैं। परमेश्वर का वह रूप सर्वभक्षक विराट् है। यहाँ श्रीकृष्ण ने सब का नाश करने वाले अपने उसी महाकाल रूप को प्रकट किया है। पाण्डवों के अतिरिक्त, युद्धभूमि में विद्यमान सभी योद्धा उनके ग्रास बनेंगे।

अर्जुन को युद्ध करना अनुकूल प्रतीत नहीं हो रहा था। उसका विचार था कि युद्ध न करना अधिक उत्तम होगा; इससे कम से कम निराशा तो नहीं होगी। इस तर्क के उत्तर में श्रीकृष्ण कहते हैं कि उसके युद्ध से उपरत हो जाने पर भी वे सब विपक्षी नष्ट अवश्य होंगे, क्योंकि उनकी ऐसी ही इच्छा है। यदि अर्जुन युद्ध नहीं करेगा, तो भी वे योद्धा किसी और प्रकार से कालकवलित हो जायेंगे। भाव यह है कि उसके युद्ध न करने से उनकी मृत्यु का निवारण नहीं हो सकेगा। वे तो वस्तुतः पहले ही मर चुके हैं। प्रकृति का नियम है कि सब का क्षयकारी काल श्रीभगवान् की इच्छा के अनुसार सब का नाश कर देता है।

तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व
जित्वा शत्रून् भुङ्क्ष्व राज्यं समृद्धम्।
मयैवैते निहताः पूर्वमेव
निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्।।३३।।

तस्मात्=इसलिए; **त्वम्**=तू; **उत्तिष्ठ**=खड़ा हो; **यशः**=कीर्ति; **लभस्व**=प्राप्त कर; **जित्वा**=जीत कर; **शत्रून्**=शत्रुओं को; **भुङ्क्ष्व**=भोग; **राज्यम्**=राज्य को; **समृद्धम्**=सम्पन्न; **मया**=मेरे द्वारा; **एव**=ही; **एते**=ये सब; **निहताः**=मारे हुए; **पूर्वम् एव**=पहले; **निमित्तमात्रम्**=केवल निमित्तमात्र; **भव**=हो; **सव्यसाचिन्**=हे सव्यसाची अर्जुन।

अनुवाद

अतएव तू खड़ा होकर युद्ध के लिये कटिबद्ध हो और शत्रुओं को मार कर महान् यश और समृद्ध राज्य को प्राप्त कर। ये सब शूरवीर पहले ही मेरे द्वारा मारे हुये हैं। हे सव्यसाचिन्! तू तो केवल निमित्तमात्र हो।।३३।।

तात्पर्य

जो दोनों हाथों से बाण चला सकता हो, उसे **सव्यसाचिन्** कहा जाता है।